नव संवत्सर - विक्रम संवत् - 2083
चैत्र नवरात्रि - 19 मार्च 2026 से 27 मार्च 2026

हे आद्या शक्ति! आप हमारे जीवन में सदैव स्थापित रहें...

नवरात्रि शक्ति साधना महोत्सव

त्रिशक्ति साधना पर्व

घट स्थापन : प्रातः 06:52 से 08:02 तक

सनातन धर्म में नवरात्रि केवल एक पर्व नहीं, बल्कि चेतना के पुनर्जागरण का काल है। वर्ष में आने वाली दो प्रमुख नवरात्रियां वासंती (चैत्र) और शारदीय (आश्विन) ऋतु-संधि पर आधारित हैं। चैत्र नवरात्रि विशेष रूप से इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह वसंत ऋतु के प्रारम्भ, नववर्ष की चेतना और शक्ति-तत्व की सक्रियता तीनों का एक साथ संगम है।

चैत्र नवरात्रि का आरम्भ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। यही तिथि अनेक परंपराओं में हिंदू नववर्ष की भी मानी जाती है।

प्रकृति के स्तर पर यह वह समय है जब जड़ता समाप्त होकर नव अंकुर फूटते हैं, वृक्षों में नई कोपलें आती हैं और सृष्टि पुनः सृजन की ओर बढ़ती है। शास्त्रीय दृष्टि से यही कारण है कि इस काल को शक्ति-साधना का सिद्ध मुहूर्त कहा गया है क्योंकि जब प्रकृति स्वयं चेतन हो रही हो, तब साधक के भीतर क्रिया, चेतना का जागरण सहज होता है।

क्रिया रजोगुण से जुड़ी है और साधना के माध्यम से वही क्रिया आगे चलकर सत्त्वगुण में परिवर्तित होती है। नवरात्रि साधक को तमस से रजस और रजस से सत्त्व की ओर ले जाने की प्रक्रिया है।

चैत्र नवरात्रि में साधक निष्क्रिय अवस्था से निकलकर कर्तव्य, धर्म और आत्मविकास की दिशा में बढ़ने लगता है। इसी कारण नवरात्रि को जागरण का पर्व कहा गया है यह भीतर की चेतना को प्रज्वलित करने का अवसर है।

चैत्र नवरात्रि हमें यह स्मरण कराती है कि देवी बाहर नहीं, भीतर जाग्रत की जानी हैं। यह पर्व बाह्य अनुष्ठानों से अधिक आंतरिक रूपांतरण का आह्वान है, जहां साधक अपने भीतर शक्ति को स्थापित कर, जीवन-संघर्षों से नहीं डरता, बल्कि उन्हें साधना बना लेता है।

नवरात्रि पर्व को तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है, और तीनों शक्ति के तीन स्वरूप हैं। नवरात्रि अर्थात् नवीन रात्रि और नौ रात्रि त्रिशक्ति को समर्पित हैं। इसमें **प्रथम शक्ति है - दुर्गा, द्वितीय शक्ति - लक्ष्मी जिसे धनदात्री देवी कहा जाता है, और तीसरी शक्ति है - सरस्वती,** जिसे ज्ञान की शक्ति कहा जाता है। ये तीनों शक्तियां संयुक्त रूप से परमात्मा का स्त्री शक्ति रूप में प्रगटीकरण है।

शक्ति की स्पष्ट शास्त्रीय व्याख्या है - **'शक्ति'** शब्द में **'श'** ऐश्वर्य सूचक तथा **'क्ति'** पराक्रम सूचक है। शक्ति का ही अन्य पर्यायवाची शब्द प्रकृति भी है तथा प्रकृति शब्द का **'प्र'** - सत्व गुण सूचक **'कृ'** रजोगुण सूचक एवं **'ति'** तमोगुण सूचक घोषित किया गया है। इस का स्पष्ट अर्थ यही है कि प्रकृति अर्थात् पराशक्ति त्रिगुण - त्रिशक्ति स्वरूप को अपने में समाहित किए हुए है, जिसकी उपासना हम महाकाली, महालक्ष्मी एवं महासरस्वती के त्रिशक्ति स्वरूप में करते हैं।

नवरात्रि की मूल भावना इन्हीं तीनों शक्तियों की आराधना, साधना एवं इससे भी अधिक उनके वरदायक प्रभाव की प्राप्ति की कामना ही है।

चैत्र नवरात्रि का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष यह भी है कि इसका समापन राम नवमी से होता है। इसका प्रतीकात्मक अर्थ गहरा है शक्ति की उपासना के बिना मर्यादा, धर्म और आदर्श की स्थापना संभव नहीं। पहले नौ दिन शक्ति का जागरण और पूर्णता अर्थात् नवमी को श्रीराम का अवतरण यह संकेत देता है कि जब शक्ति संतुलित और संस्कारित होती है, तभी वह धर्म के रूप में प्रकट होती है।

प्रत्येक गृहस्थ साधक, स्त्री-पुरुष द्वारा चैत्र नवरात्रि त्रिशक्ति पूजन सम्पन्न करने हेतु आवश्यक सामग्री पूजा स्थान में स्थापित करें - **1. मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठायुक्त त्रिशक्ति यंत्र, 2. महाकाली सिद्धि महिषी, 3. महालक्ष्मी सिद्धि सिद्ध चक्र, 4. सरस्वती सिद्धि प्रज्ञिका, 5. मंत्र जप हेतु शक्ति माला।**

नित्य पूजन - विधान

प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर उत्तर की ओर मुख कर बैठ जाएं, सामने चौकी पर लाल वस्त्र बिछाकर गुरु-चित्र एवं **भगवती दुर्गा** का चित्र स्थापित करें।

पवित्रीकरण

बांएं हाथ में जल लेकर दाएं हाथ से ऊपर छिड़कें -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ।।

साधक अपने दांईं ओर धूप, दीप जलाएं एवं निम्न मंत्र बोलकर कुंकुम, अक्षत, अर्पित करें -

भो दीप देव रूपस्वत्वं कर्म साक्षि ह्यविद्घ्न कृत्
यावत् कर्म समाप्तिः स्यात् तावदत्र स्थिरो भव।

आसन शुद्धि

अपने आसन के नीचे कुंकुम से एक त्रिकोण बनाएं तथा निम्न मंत्र बोलकर उस पर पुष्प, अक्षत, कुंकुम चढ़ाएं।

ॐ पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि! पवित्रं कुरु चासनम ।।

दिग्बन्धन

बांएं हाथ में अक्षत लेकर निम्न मंत्र बोलकर सभी दिशाओं में अक्षत के दाने फेंकें -

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूमि संस्थिताः,
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते ते नश्यन्तु शिवाज्ञया।
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम्,
सर्वेषाम्अ विरोधेन पूजा कर्म समारम्भे।

भैरव-स्मरण

हाथ जोड़कर भगवान भैरव का ध्यान करें -

तीक्ष्णदंष्ट्र महाकाय कल्पान्त दहनोपम,
भैरवाय नमस्तुभ्यं मनुज्ञां दातुमर्हसि।
ॐ भ्रं भैरवाय नमः।

संकल्प

(दाएं हाथ में जल लेकर संकल्प करें)

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्रीब्रह्माणो द्वितीय परार्द्धे श्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति कलियुगे कलिप्रथम चरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे चैत्र मासे शुक्ल पक्षे अमुक वासरे (दिन का नाम बोलें) *अमुक गोत्रोत्पन्नोहं* (गोत्र बोलें) *अमुक शर्माहं* (नाम बोलें) *भगवती दुर्गा प्रीत्यर्थ गुरोरज्ञया यथा मिलितोपचारैः पूजनं अहं करिष्ये।*

(जल जमीन पर छोड़ दें।)

कलश-स्थापन

कलश को जल से भरकर अपनी बांईं ओर पुष्पों का आसन देखकर रखें, उसमें वरुण देवता का आह्वान करें। हाथ जोड़कर बोलें -

सर्वे समुद्रा सरिता तीर्थानि जलदा नदाः।
आयान्तु देव पूजार्थं दुरितक्षय कारकाः ।।
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृ गणा स्थिताः।

वं वरुणाय नमः का 21 बार जप करें तथा कलश में गंध, अक्षत, पुष्प और सिक्का डालकर तीर्थों का आह्वान करें –

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु।।
ब्रह्माण्डोरदक तीर्थानि करैः पृष्ठानि ते रेवः।
तेन सत्येन मे देव, तीर्थं देहि दिवाकर।।

निम्न मंत्र बोलकर कलश की चारों दिशाओं में कुंकुम से चार बिन्दियां लगाएं।

पूर्वे ऋग्वेदाय नमः। दक्षिणे यजुर्वेदाय नमः। पश्चिमे सामवेदाय नमः। उत्तरे अथर्ववेदाय नमः।

इसके बाद एक नारियल को कलश पर स्थापित करें और कलश पर मौली बांध दें। कलश पर तिलक, अक्षत, पुष्पादि अर्पित करें और दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना करें –

भो वरुण! प्रसन्नो भव, वरदो भव, अनया पूजया वरुणादि आवाहिता देवता प्रीयन्ताम्।

गणपति पूजन

गणपति विग्रह या चित्र को अपने सामने स्थापित करें और दोनों हाथ जोड़कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

ॐ गजाननं भूतं गणधि सेवतिं, कपित्थ जम्बू फल चारु भक्षणं।
उमासुतं शोक विनाश कारकं, नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजं।।

इसके पश्चात् विग्रह चित्र को स्नान कराकर, वस्त्र, पुष्प, अक्षत, नैवेद्य इत्यादि अर्पित करें।

ॐ गं गणपतये नमः स्नानं समर्पयामि। वस्त्रं समर्पयामि नमः। तिलकं अक्षतान् पुष्पाणि समर्पयामि नमः। नैवेद्यं निवेदयामि नमः। (स्नान, वस्त्र, पुष्प, अक्षत, नैवेद्य अर्पित करें)

गुरु पूजन

(हाथ जोड़कर गुरुदेव से प्रार्थना करें)

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः।।
ध्यान मूलं गुरो र्मूर्तिः पूजा मूलं गुरोः पदम्।
मंत्र मूलं गुरोर्वाक्यं मोक्ष मूलं गुरोः कृपा।
श्री पारमेष्ठि गुरुं निखिलेश्वरानन्दं आह्वाययामि स्थापयामि नमः।

आपके पास जो गुरुचित्र, गुरु पादुका है उसे स्नान कराकर कुंकुम, अक्षत, पुष्पदीप अर्पित करें –

स्नानं समर्पयामि गुरुर्देवाय नमः। गन्धं समर्पयामि अक्षतान् समर्पयामि। धूपं दीपं पुष्पाणि समर्पयामि।

निम्न मंत्र बोलकर नैवेद्य अर्पित करें –

जगद्गुरुः जगन्नेता जगदन्तः जनार्दनः।
जयनेश्वरश्च विष्णुर्जगन्मंगल दायकः।
श्री गुरुचरण कमलेभ्यो नमः नैवेद्यं निवेदयामि।

दोनों हाथों में पुष्प लेकर '*ॐ गुरुदेवाय नमः*' बोलकर साधना में सफलता की प्रार्थना कर गुरु-चित्र पर चढ़ाएं।

प्रारम्भिक दुर्गा पूजन –

इस पूजन क्रम के पश्चात् उसी बाजोट/चौकी पर **प्राण प्रतिष्ठित त्रिशक्ति यंत्र** तथा **शक्ति माला** स्थापित कर दें। दुर्गा की स्तुति निम्न ध्यान मंत्र से करें –

ॐ विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेवितम्।
हस्तैश्चक्र गदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनीं बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

अब कुंकुम, अक्षत एवं पुष्प से **त्रिशक्ति यंत्र और माला** का पूजन करें। इसके पश्चात् **नौ सुपारी** स्थापित करें, उनका पूजन नवदुर्गा के नौ स्वरूपों का आह्वान करते हुए करें, प्रत्येक सुपारी पर कुंकुम से तिलक करें –

प्रथमं शैलपुत्री च द्वितीयं ब्रह्मचारिणी।
तृतीयं चन्द्रघण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।।
पंचमं स्कन्दमातेति षष्ठं कात्यायनीति च।
सप्तमं काल रात्रिति महगौरीति चाष्टमम्।
नवमं सिद्धिदात्री च नवदुर्गाः प्रकीर्तिताः।
उक्तान्येतानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मनाः।।

इसके पश्चात् शक्ति माला से दुर्गा के मूल मंत्र एवं नवार्ण मंत्र का जप करें।

मूल मंत्र

।।ॐ दुं दुर्गायै नमः।।

नवार्ण मंत्र

।। ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे।।

नित्य पूजन विधान सम्पन्न करने के पश्चात् नवरात्रि की विशेष साधना प्रारम्भ करें। यह तो प्रारम्भिक त्रिशक्ति दुर्गा पूजन है अब तीन-तीन दिवस क्रमशः **महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती पूजन एवं साधना** सम्पन्न करें।

शक्ति की उपासना का उद्देश्य केवल लाभ प्राप्ति नहीं, बल्कि जीवन के चारों पुरुषार्थ धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का संतुलन है। यदि जीवन में केवल धन है तो जीवन शुष्क हो जाता है, और यदि केवल त्याग है तो जीवन निष्क्रिय। चैत्र नवरात्रि हमें सिखाती है कि शक्ति के बिना न भोग संभव है, न योग। यही कारण है कि इस पर्व को जीवन के नवीनीकरण का उत्सव कहा गया है।

प्रथम तीन दिवस - महाकाली दुर्गा

नित्य पूजन विधान सम्पन्न करने के पश्चात् प्रथम तीन (19-21 मार्च 2026) दिवस महाकाली पूजन के लिए हैं। अपने सामने पूजा स्थान में स्थापित **'त्रिशक्ति यंत्र'** का पूजन कर, महाकाली स्वरूप **'महिषी'** को अपने सिर से तीन बार घुमाकर यंत्र के सामने स्थापित करें। फिर दोनों हाथ जोड़कर अपने दुर्गुणों के नाश हेतु दुर्गा का ध्यान करें -

दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेष जन्तोः,
स्वस्थैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि।
दारिद्र्य दुःख भय हारिणी कात्वदन्या,
सर्वोपकार करणाय सदार्द्र चित्ता।।
ॐ जगदम्बायै नमः आवाहयामि स्थापयामि।

इदं पुष्पासनं समर्पयामि नमः। (यंत्र को पुष्पासन दें)
पाद्यं समर्पयामि नमः। (यंत्र पर दो आचमनी जल चढ़ाएं)
अर्घ्यं समर्पयामि नमः। (हाथ में जल, कुंकुम लेकर चढ़ाएं)
स्नानं समर्पयामि नमः। (यंत्र को जल से स्नान कराएं)
वस्त्रं समर्पयामि नमः। (यंत्र पर मौली अर्पित करें)
गन्धं समर्पयामि नमः। (कुंकुम अक्षत चढ़ाएं)
नैवैद्यं समर्पयामि नमः। (नैवेद्य अर्पित करें)
पुष्पांजलि समर्पयामि नमः।

हाथ में जल लेकर अपनी मनोकामना बोलें। **'त्रिशक्ति माला'** से निम्न मंत्र की 11 माला जप करें -

।।क्रीं ह्रीं हुं दक्षिण कालीके क्रीं ह्रीं हुं नमः।।

मंत्र जप के पश्चात् गुरु आरती एवं दुर्गा आरती कर प्रसाद ग्रहण करें।

मध्य के तीन दिवस - लक्ष्मी साधना

नित्य पूजन विधान सम्पन्न करने के पश्चात् नवरात्रि के चतुर्थ दिवस (22-24 मार्च 2026) तक इस विधान अनुसार पूजन सम्पन्न करें। प्रथम दिवस पर स्थापित किए गए **'त्रिशक्ति यंत्र'** व महिषी का स्थान परिवर्तन न करें। यंत्र के दांईं ओर समृद्धि हेतु **'सिद्ध चक्र'** स्थापित कर लक्ष्मी का आह्वान करें -

सर्व मंगल मांगल्ये विष्णु वक्षः स्थलायये।
आवाहयामि देवि! त्वां क्षीर सागर सम्भवे।।

निम्न मंत्र बोलकर यंत्र पर कुंकुम, अक्षत, पुष्प, दीप आदि अर्पित करें और अपनी मनोकामना का उच्चारण करें -

श्री महालक्ष्म्यै नमः आह्वानं समर्पयामि। गंधं, अक्षतान्, पुष्पाणि, धूपं, दीपं समर्पयामि नमः।

निम्न मंत्र बोलकर विविध भोज्य पदार्थ, मिष्ठान्न,फलादि यंत्र पर चढ़ाएं -

नाना मोदक भक्ष्यैश्च फल लड्डु समन्वितं
नैवेद्यं गृह्यतां देवि नारायण कुटुम्बिनी।
श्री महालक्ष्मयै नमः, नैवेद्यं समर्पयामि।
नाना ऋतु फलानि च समर्पयामि।

इसके बाद पांच बत्तियों का दीपक जलाकर महालक्ष्मी की निम्न प्रकार से आरती या नीराजन करें-

नीराजनं समानीतं क्षीरसागर सम्भवे,
गृह्यतां अर्पितं भक्त्या गरुड़ध्वज भाविनी।
श्रीमहालक्ष्म्यै नमः नीराजनं समर्पयामि।

दोनों हाथों में खुले पुष्प लेकर पुष्पांजलि दें।

पुष्पांजलिं गृहाण मम पुरुषोत्तम वल्लभे।
भक्त्या समर्पितं देवि! सुप्रीता भव सर्वदा
श्री महालक्ष्म्यै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि नमः।

'त्रिशक्ति माला' से निम्न मंत्र की 11 माला जप करें -

मंत्र

।। ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं महालक्ष्मी आगच्छ ॐ नमः।।

अब गुरु आरती एवं दुर्गा आरती कर प्रसाद ग्रहण करें। महाकाली दुर्गा इच्छा शक्ति तथा महालक्ष्मी क्रिया शक्ति के पूजन के पश्चात् नवरात्रि के शेष तीन दिन ज्ञान शक्ति सरस्वती की आराधना सम्पन्न करें।

अंतिम तीन दिवस - सरस्वती साधना

नित्य पूजन विधान के पश्चात् नवरात्रि के सातवें दिवस से नवमीं तक इस विधान अनुसार पूजन सम्पन्न करें। प्रारम्भिक पूजन के बाद **'त्रिशक्ति यंत्र'** के बांईं ओर समृद्धि हेतु **'प्रज्ञिका'** स्थापित करें। सरस्वती आह्वान करें -

चतुर्भुजां चतुर्वर्णां चतुरानन वल्लभां।
आवाहयामि वाग्देवीं वीणा पुस्तक धारिणीं।।
श्री सरस्वत्यै नमः आह्वानं ध्यानं च समर्पयामि।
गन्धं, पुष्पं, धूपं, दीपं, नैवेद्यं समर्पयामि श्री सरस्वत्यै नमः। (यंत्र पर कुंकुम, पुष्प, दीप, नैवेद्य अर्पित करें)

निम्न मंत्र बोलते हुए पुष्प की पंखुड़ियां अर्पित करें -

ॐ ऐं श्रौं नमः। ॐ ऐं श्रीं नमः। ॐ ऐं हंसं नमः। ॐ ऐं हौं नमः। ॐ ऐं ह्रीं नमः। ॐ ऐं अं नमः। ॐ ऐं क्लीं नमः। ॐ ऐं चां नमः। ॐ ऐं मुं नमः। ॐ ऐं डां नमः। ॐ ऐं यैं नमः। ॐ ऐं वि नमः।

इसके बाद दोनों हाथों में पुष्प लेकर भगवती सरस्वती को पुष्पांजलि समर्पित कर अपनी मनोकामना बोलें -

पुष्पांजलिं मया दत्तां गृहाण वर्ण मालिनि।
शारदे लोक मातस्त्वां आश्रितेष्ट प्रदायिनि।।
श्री सरस्वत्यै नमः पुष्पांजलिं समर्पयामि।

इसके पश्चात् **'त्रिशक्ति माला'** से निम्न मंत्र की 11 माला मंत्र जप करें-

मंत्र

।। ॐ ऐं ऐं वाग्वीश्वर्यै ऐं ऐं ॐ नमः ।।

मंत्र जप के पश्चात् गुरु आरती एवं दुर्गा आरती कर प्रसाद ग्रहण करें। इस प्रकार सम्पूर्ण नवरात्रि में विधिवत् पूजन सम्पन्न करना है। **नवरात्रि की नवमीं (27 मार्च 2026)** को जप समाप्ति के बाद साधना सामग्री को लाल वस्त्र में बांधकर जल में प्रवाहित कर दें। कलश के जल को सारे घर में छिड़कें, शेष जल तुलसी के पौधे में डाल दें।

यदि सम्भव हो, तो अन्तिम दिन नौ कुमारी कन्याओं को भोजन कराकर उचित दक्षिणा प्रदान करें। नवरात्रि में साधक को पूर्ण स्वाध्याय के साथ साधना सम्पन्न करनी चाहिए। इस प्रकार नवरात्रि में की गई साधना का प्रत्यक्ष फल प्राप्त होता ही है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 490/-

दुर्गा की आरती

ॐ जय अम्बे गौरी मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशदिन ध्यावत हरि ब्रह्मा शिवरी।।१।।
ॐ जय अम्बे...

मांग सिन्दूर विराजत टीको मृगमदको।
उज्ज्वल से दोऊ नयना, चंद्रवदन नीको।।२।।
ॐ जय अम्बे...

कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजे।
रक्त पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजे ।।३।।
ॐ जय अम्बे...

केहरि वाहन राजत, खड्ग खप्पर धारी।
सुर, नर, मुनिजन सेवत, तिनके दुःखहारी ।।४।।
ॐ जय अम्बे...

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर सम राजत ज्योति।।५।।
ॐ जय अम्बे...

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषासुर घाती।
धूम्रविलोचन नैना निशदिन मदमाती।।६।।
ॐ जय अम्बे...

चण्ड मुण्ड संहारे, शोणित बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ।।७।।
ॐ जय अम्बे...

तुम ब्रह्माणी, रुद्राणी, तुम कमला रानी।
आगम निगम बखानी, तुम शिव पटरानी।।८।।
ॐ जय अम्बे...

चौसठ योगिनी गावत, नृत्य करत भैरु
बाजत ताल मृदंगा और बाजत डमरू।।९।।
ॐ जय अम्बे...

तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःखहर्ता, सुख सम्पत्ति करता।।१०।।
ॐ जय अम्बे...

भुजा आठ अति शोभित, वर मुद्रा धारी।
मनवांछित फल पावत, सेवत नर नारी।।११।।
ॐ जय अम्बे...

कंचन थाल विराजत अगर कपूर बाती।
श्री माल केतु में राजत कोटि रतन ज्योति ।।१२।।
ॐ जय अम्बे...

श्री अम्बेजी की आरती जो कोई नर गावे।
कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पत्ति पावे ।।१३।।
ॐ जय अम्बे...